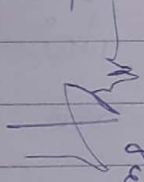


**सूत्राये** — कला के सन्दर्भ में सूत्र का अर्थ है — छोटी, पावी, मुख, नेत्रों आदि की सूत्र भारतीय चित्रकला में सूत्रों का आदर्श रूप मिलता है। अधिकतर नृत्य सूत्रों से ही भारतीय कला में अंकित हैं। सूत्रों से ही आकृति के भावों को दर्शाया गया है। राजपूत, मुगल एवं अजंता शैली की नृत्य सूत्रों विश्व प्रसिद्ध हैं। व्यान, उपदेश, क्षमा, शिवा, लयाग, वीरता, क्रोध, विरह, प्रतीक्षा, काँटा निकालने की पीड़ा, स्तम्भोपन आदि भावों को सूत्रों से ही दर्शाया गया है।

**आलंकारिकता** — अलंकरण से चित्र सवस्ता है और वह आकर्षक सिद्ध होता है। अजंता की गुफाओं में प्रत्येक चित्र में अलंकरण का बड़ी कुशलता से प्रयोग किया गया है।

**रेखा**  रेखा दो बिन्दुओं या सीमाओं के बीच की दूरी होती है जो बहुत सूक्ष्म होती है जो गती की दिशा को निर्देश करती है। लेकिन कला पर के अन्तर्गत रेखा का प्रतीकात्मक महत्व है और वह रूप की अभिव्यक्ति व प्रभाव को अंकित करती है। भारतीय चित्रकला रेखा प्रधान है रेखाओं के बिना किसी भी कलाकृति की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

**रूप या आकृति** — रूप का अर्थ है — आकृति हमें क्या समझा रही है? इसे ही आकृति का रूप कहा जाता है। दृश्य कलाओं में रूप वह है जो सभी ओर से रेखाओं अथवा अन्य रूपों से घिरा हुआ या सीमित हो। 'रूप' एक धारण है जो धर परस्परिक सम्बन्ध के नियम पर आश्रित रहती है। रूप के आयामों के तकनीक से थोड़ा-सा परिवर्तित करके कलाकार कलाकृति का रूप ही बदल देता है। आयामों के तकनीक से परिवर्तन से हँसता चेहरा होता

हैं ऐसा महसूस होने लगता है और रौता पैहरा टंसता है।

**रंग (वर्ण) —** किसी भी कलाकृति की शोभा उसके रंग से होती है - (i) प्राथमिक रंग — प्राथमिक रंग वह होते हैं जो किसी भी रंग के मिश्रण से नहीं बनते जो प्राकृतिक से बने हैं उसे (Primary colour) कहते हैं जैसे लाल, नीला, पीला और हरा। (ii) द्वितीयक रंग — वे रंग जो दो रंगों को मिलाकर एक नया रंग बनाया जा सके उसे (Secondary colour) कहते हैं।

प्रकाश की मात्रा पीले रंग में सबसे अधिक और नीले रंग में सबसे कम होती है। रंगों के उष्ण तथा शीतल प्रभाव भी माने जाते हैं। पीले तथा बैंगनी न उष्ण हैं न शीतल। लाल तथा नारंगी उष्ण और हरे तथा नीले शीतल हैं।

**मान (value) —** रंगों के हल्के और गहरे पन को मान कहते हैं जब रंग में सफेद रंग मिलते हैं तो मान में वृद्धि होती है और काला रंग मिलते हैं तो मान में कमी होती है।

**पौत (Texture) —** किसी भी वस्तु के धरातलीय गुण को पौत कहते हैं जिस प्रकार कपड़े की बुनावट मोटी या बारीक होने से उसके धरातलीय प्रभाव में अंतर आ जाता है उसी प्रकार चित्र सूर्ति या भवन के धरातलों के चिकने या खुरदरे होने से उनके धरातलीय प्रभाव में अंतर आ जाता है। इसी को पौत कहते कहा जाता है।

**अन्तराल (Space) —** " चित्रकार का चित्र रचना में चित्र का वह आधार व क्षेत्र जिसपर कलाकार रचना कार्य करता है वह अन्तराल कहलाता है "।



दृश्यकला के इस तत्व का महत्व इसी से  
स्पष्ट है कि जिन कृतियों में इस तत्व का कुशलता से  
प्रयोग किया जाता है वे हम से ही ध्यान आकर्षित  
कर लेती हैं।